इकाई 15 क्षेत्रीय प्रसार

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

आप इकाई 14 में पढ़ चुके हैं कि दिल्ली सल्तनत के शासकों ने सैनिक विजय प्राप्त करने के पश्चात् सल्तनत को सुदृढ़ता प्रदान करने का प्रयास किया। अतः दिल्ली सल्तनत के शासन काल के प्रारम्भिक सौ वर्षों में, विजित किये गये प्रदेशों के क्षेत्रीय प्रसार में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई। सल्तनत को स्थायित्व प्रदान करने के पश्चात् ही 14वीं सदी ई० में सल्तनत की सीमाओं का प्रसार करने की ओर ध्यान केन्द्रित किया गया। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको :

- दिल्ली सल्तनत की सीमाओं में 14वीं सदी ई० में उत्तर, उत्तर-पश्चिम तथा उत्तर-पूर्व में होने वाले प्रसार का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा, और
- दक्षिण भारत की ओर होने वाले प्रसार की जानकारी होगी।

15.1 प्रस्तावना

13वीं सदी के मध्य में तुर्की सुल्तानों द्वारा प्रारम्भिक विस्तार करने की लहर के शान्त हो जाने के पश्चात् बाद के सुल्तानों का मुख्य उद्देश्य सल्तनत को दृढ़ता प्रदान करना था। अतः खलजी वंश की स्थापना तक सल्तनत की प्रारम्भिक सीमाओं में कोई उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हो पायी। 13वीं सदी ई० के अन्त में तुर्की शासन का खलजी वंश द्वारा तख्त पलट दिया गया। इससे शासक वर्ग के जातीय चरित्र में काफी बदलाव आया। यह एक अति महत्वपूर्ण घटना थी। सल्तनत की उन्मुक्त नीति और सल्तनत के मामलों का प्रबन्ध करने के लिये विभिन्न प्रकार के शासक समूहों की भूमिका के फलस्वरूप क्षेत्रीय प्रसार करना सम्भव हो सका। जलालुद्दीन फिरोज़ खलजी द्वारा सत्ता प्राप्त करने के बाद झाइन एवं रणथम्भौर में हुई लूटमार ने यह सिद्ध कर दिया कि क्षेत्रीय प्रसार एक राजनैतिक आवश्यकता थी। पड़ोसी राज्य शक्तिशाली हो गये थे और उनके द्वारा किया गया कोई भी संगठित प्रयत्न दिल्ली सल्तनत के लिये महंगा साबित हो सकता था। इसके अतिरिक्त अलाउद्दीन खलजी के शासन काल में जहाँ एक ओर इन हमलों का कारण क्षेत्रीय प्रसार था वहीं धन एकत्रित करने का लालच भी इसके साथ मिश्रित हो गया। 14वीं सदी ई० के प्रारम्भ में इन दोनों कारकों ने क्षेत्रीय प्रसार की गति को सुनिश्चित किया।

15.2 खलजी शासन का प्रसार

क्षेत्रीय प्रसार के कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिए प्रथम खलजी सुल्तान जलालुद्दीन के पास न तो इच्छा शक्ति थी और न ही संसाधन। उसके छः वर्ष के शासन को सुल्तान की नीतियों तथा उसके समर्थकों के स्वार्थों के बीच सामंजस्य बनाये रखने के आन्तरिक विरोधाभासों ने मानों

जकड़ लिया था। दुर्भाग्यवश समस्या का समाधान सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या के रूप में हुआ। अलाउद्दीन, जलालुद्दीन का हत्यारा एवं उत्तराधिकारी, की साम्राज्य प्रसार की भिन्न योजना थी। वह क्षेत्रीय अधिग्रहण तथा सल्तनत के प्रसार के उस युग का अग्रदूत था, जिसके शासन काल के दौरान, 14वीं सदी ई० के मध्य तक, सल्तनत की सीमायें दक्षिणी प्रायद्वीप के अन्तिम छोर तक फैल गईं।

15.2.1 पश्चिम तथा मध्य भारत

अलाउद्दीन खलजी ने दिल्ली में अपनी स्थिति को सुदृढ़ तथा स्वयं को मजबूती से स्थापित करने के बाद सन् 1299 ई० में गुजरात प्रदेश में अपने प्रथम सैनिक अभियान का प्रारम्भ किया। उसके अधीन यह प्रथम क्षेत्रीय प्रसार भी था। इसी के साथ-साथ शायद गुजरात, जिसके सम्पन्न व्यापार ने सदैव ही आक्रमणकारियों को ललचाया था, की सम्पन्नता की ओर भी अलाउद्दीन आकर्षित हुआ।

शाही सेना का नेतृत्व संयुक्त रूप से अलाउद्दीन के दो सर्वश्रेष्ठ सेनापतियों उलुग खान एवं नुसरत खान के अधीन था। गुजरात को सरलता के साथ जीत लिया गया। प्रदेश को लूटा गया। राजधानी अन्हिलवाड़ा को नष्ट कर दिया गया। गुजरात का प्रशासनिक नियन्त्रण अल्प खान को गवर्नर के रूप में सौंप दिया गया।

साम्राज्य का पश्चिम की ओर प्रसार तथा उस पर नियन्त्रण करने के लिये अलाउद्दीन ने सन् 1305 ई० में मालवा को अपने अधीन कर लिया। यह एक विशाल प्रदेश था। इस राज्य की राजधानी माण्डू से राजा राय महालक देव अपने एक शक्तिशाली मन्त्री कोका प्रधान की सहायता से शासन करता था। राय की सेना शाही सेना से संख्या में कहीं अधिक थी लेकिन शाही सेना ने अन्ततः सफलता प्राप्त कर ली और माण्डू के किले पर अधिकार कर लिया गया। मालवा के पतन के बाद, प्रशासन के लिये उसको आइन उल मुल्क को सौंप दिया गया और उसने शीघ्र ही उज्जैन, धार तथा चन्देरी को अपने नियन्त्रण में ले लिया।

मालवा का अनुसरण करते हुए सिवाना, जो जोधपुर से दक्षिण पश्चिम की ओर लगभग 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित था, पर आक्रमण किया गया। अलाउद्दीन की सेना ने सन् 1304-05 से लगभग छः वर्षों तक सिवाना पर बिना कोई विशेष सफलता प्राप्त किये घेराव डाले रखा। किले पर अन्ततः 1309 ई० में अधिकार कर लिया गया। सिवाना का शासक राय शीतल देव सैनिक अभियान के दौरान मारा गया। किले तथा प्रदेश को कमालुद्दीन गुर्ग के नियन्त्रण में सौंप दिया गया।

सन् 1305 ई० में ही जालौर पर आक्रमण किया गया। युद्ध में इसके शासक कन्हार देव का वध कर दिया गया। किले को सल्तनत में मिला लिया गया और कमालुद्दीन गुर्ग के नियन्त्रण में दे दिया गया।

15.2.2 उत्तर-पश्चिम तथा उत्तर भारत

अलाउद्दीन द्वारा सत्ता प्राप्त करने के बाद अलाउद्दीन को जलालुद्दीन के परिवार द्वारा, जो भागकर मुल्तान चले गये थे, सम्भावित विद्रोह के दमन की समस्या का सामना करना पड़ा। उलुग खान तथा जफर खान को मुल्तान में अरकली खान को समाप्त करने का कार्य सौंपा गया। अरकली खान को बंदी बना लिया गया और सुरक्षित रूप से दिल्ली लाया गया। मुल्तान एक बार फिर दिल्ली के नियन्त्रण में आ गया। मुल्तान अभियान किसी भी तरह से क्षेत्रीय प्रसार का कार्य न था, अपितु सुदृढ़ीकरण की नीति का ही एक भाग था।

सन् 1300 ई० में अलाउद्दीन ने रणथम्भौर पर आक्रमण करने के लिये उलुग खान को भेजा। इस समय रणथम्भौर का शासक राय हमीर था। उलुग खान के अभियान में अवध का गवर्नर नुसरत खान भी सम्मिलित हो गया। रणथम्भौर जाते हुए मार्ग में शाही सेनाओं ने झाइन पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् रणथम्भौर के किले पर घेराव डाला, जिसका नेतृत्व अलाउद्दीन ने स्वयं अपने हाथ में लिया। यह घेराव लगभग छः माह तक चला। अन्ततः किले के अन्दर महिलाओं ने **जौहर** द्वारा अपनी जान दे दी और एक रात स्वयं राय हमीर देव ने किले के फाटकों को खोल दिया और लड़ते-लड़ते मारा गया।

इसी नीति का अनुसरण करते हुए अलाउद्दीन ने 1303 में चित्तौड़ पर भी आक्रमण किया।

कई आक्रमणों के बाद चित्तौड़ के राजा ने अचानक स्वयं सुल्तान के सम्मुख आत्मसमर्पण का

दिल्ली सल्तनत
1290-1320 A.D.
सीमाएँ
काबुल
कन्धार
झेलम न.
चेनाब न.
रावी न.
लाहौर
सतलज न.
मुल्तान
सरहिन्द
उच्छ
सिन्धु न.
राजपूताना
दिल्ली
बरन
बदायूँ
यमुना न.
गंगा न.
नागौर
मन्दौर
अजमेर
जैसेलमेर
सिन्ध
सवाना
बूँदी
ग्वालियर
कड़ा
प्रयाग
जालौर
रणथम्भौर
चन्देरी
गौड़
सोनारगाँव
चितौड़
कालिंजर
बिहार
कच्छ
मालवा
भीलसा
गुजरात
खम्भात
भड़ौच
असीरगढ़
महानदी
देवगिरि
तेलंगाना
जाजनगर
यादव
वारंगल
गोदावरी न
दाभोल
रायचूर
कृष्णा न.
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
द्वारसमुद्र
काँची
होयसल
कावेरी न
कालीकट
माबार
कोचीन
पांड्य
श्रीलंका
50 0 60 100 150 200 250 300
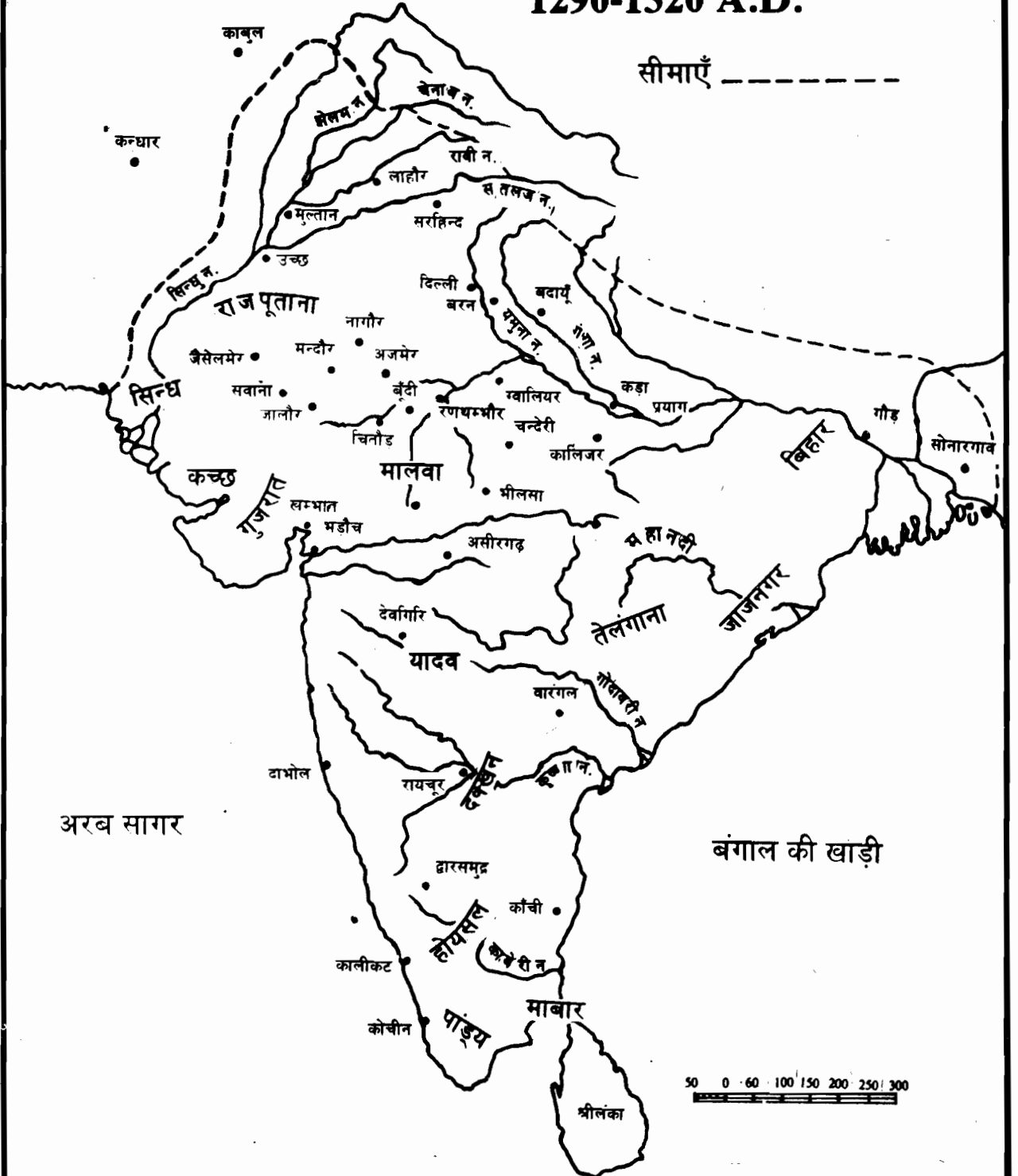
गया।'लेकिन शीघ्र ही किले को चित्तौड़ के पूर्व शासक के भानजे मालदेव को सौंप दिया गया जो अलाउद्दीन के शासन के अन्त तक दिल्ली के प्रति वफादार बना रहा।

अलाउद्दीन के शासन के प्रथम दशक के अन्त में दिल्ली सल्तनत की सीमाओं का प्रसार लगभग सम्पूर्ण उत्तर, पश्चिम तथा मध्य भारत में हो चुका था। उत्तर-पश्चिम में मुल्तान से मध्य भारत में विन्ध्या पर्वत तक, और सम्पूर्ग राजपूताना का क्षेत्र दिल्ली सल्तनत के अधीन हो गया।

15.2.3 दक्खन एवं दक्षिण की ओर प्रसार

देवगिरी पहले ही 1296 ई० में जब अलाउद्दीन खलजी कड़ा का गवर्नर था उसकी लूट का शिकार हो चुका था। दक्खन में दूसरे सैनिक अभियान की योजना भी अलाउद्दीन ने सन् 1306-7ई० में राय रामचन्द्र देव के विरुद्ध ही बनाई। इस आक्रमण का तात्कालिक कारण देवगिरी द्वारा लंबे समय से दिल्ली को वार्षिक नज़राना न भेजना था।

दक्खन के सैनिक अभियान का नेतृत्व मलिक काफूर को सौंपा गया और इस अभियान में मदद करने के लिये आइन उल मुल्क मुल्तानी तथा अल्प खाँ को निर्देश भेजे गये। रामचन्द्र देव ने थोड़े से विरोध के पश्चात् व्यक्तिगत सुरक्षा का आश्वासन मिलने पर शाही सेनाओं के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। रामचन्द्र देव का सुल्तान द्वारा बहुत सम्मान किया गया और इस आश्वासन के साथ उसका शासन वापस लौटा दिया कि वह सुल्तान को वार्षिक नज़राना शीघ्रता के साथ लगातार भेजेगा। रामचन्द्र देव ने सुल्तान के साथ अपनी पुत्री का विवाह भी कर दिया। इससे स्पष्ट होता है कि अलाउद्दीन की नीति देवगिरी पर अधिकार करने की नहीं थी। वह इसको एक संरक्षित राज्य बनाना चाहता था और जितना सम्भव था उससे धन प्राप्त करना चाहता था।

मलिक काफूर द्वारा देवगिरी अभियान के कुशल संचालन से सुल्तान का उसकी सैनिक योग्यताओं में विश्वास बढ़ गया। सुल्तान ने दक्षिण प्रायद्वीप पर सैनिक आक्रमणों का उत्तरदायित्व उस पर सौंपने का निश्चय किया। ऐसा प्रतीत होता है कि अलाउद्दीन के दक्षिण अभियानों का मुख्य उद्देश्य दक्षिणी राज्यों से धन प्राप्त करना था न कि क्षेत्रीय प्रसार करना। अतः अक्तूबर 1309 ई० में मलिक काफूर के नेतृत्व में शाही सेना ने दक्षिण की ओर अपने अभियान का प्रारम्भ किया। अमीर खुसरो ने अपनी रचना **खजाय उल फुतूह** में इन सैनिक अभियानों का विशद् विवरण किया है। रास्ते में मलिक काफूर ने आदिलाबाद ज़िले में स्थित सीरपुर के किले पर अचानक आक्रमण किया। सीरपुर के कुलीनों ने भाग कर वारंगल के राय रुद्रदेव के पास शरण ली। शाही सेना ने सीरपुर के किले पर अधिकार कर लिया।

जनवरी 1310 ई० के मध्य में शाही सेनायें वारंगल के समीप पहुंच गयीं।

14 फरवरी 1310 में काफूर ने किले पर आक्रमण किया। युद्ध का शीघ्र ही अन्त हो गया क्योंकि राय रुद्रदेव आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार हो गया। उसने अपने कोष का एक भाग सुल्तान को देने का वचन दिया और वह वार्षिक नज़राना अदा करने के लिए भी सहमत हो गया।

सुल्तान की सेना ने वारंगल में शानदार सफलता प्राप्त की। शाही सेना ने 20,000 घोड़े, हाथी, सोने का अपार भण्डार और हीरे-जवाहरातों से लदे हज़ारों ऊंटों को लूट में प्राप्त किया। इस प्रांत का अधिग्रहण नहीं किया गया बल्कि उसे संरक्षित राज्य का दर्जा प्रदान किया गया; जून 1310 ई० के प्रारम्भ में शाही सेना दिल्ली वापस लौट आयी। सुल्तान की धन की लालसा की अब कोई सीमा न थी। मंगोलों के खतरों से उत्तर की सीमा के सुरक्षित हो जाने के फलस्वरूप और विन्ध्याचल के उत्तर तक का सम्पूर्ण भू-भाग उसके अधीन हो जाने के कारण उसने सुदूर दक्षिण की ओर दूसरा सैनिक अभियान भेजने की योजना बनायी।

राजा की दृष्टि अब वारंगल से और दक्षिण की ओर द्वारसमुद्र पर केन्द्रित थी। मलिक काफूर को एक बार फिर शाही सेना का नेतृत्व सौंपा गया। काफूर को लगभग 500 हाथी सहित सोने एवं जवाहरातों को प्राप्त करने का आदेश दिया गया था। फरवरी 1311 ई० में द्वारसमुद्र के किले पर शाही सेना ने घेराव डाला और दूसरे ही दिन द्वारसमुद्र के शासक बल्लाल देव की ओर से शांति स्थापित करने का प्रस्ताव आ गया। अन्य समझौतों की भांति द्वारसमुद्र के शासक ने भी अपार धन और वार्षिक नज़राना देने का वचन दिया।

द्वारसमुद्र की सफलता से उत्साहित होकर मलिक काफूर ने अपने सैनिक अभियान को आगे दक्षिण की ओर जारी रखा। वह माबार की ओर अग्रसर हुआ और एक माह से भी कम समय में ही पांड्यों की राजधानी मदुरा पहुंच गया। लेकिन पांड्य शासक सुंदर पहले ही भाग गया। मलिक काफूर ने राज्य के कोष एवं हाथियों पर अधिकार कर लिया जो मात्रा में कुल 512 हाथी, 5000 घोड़े तथा 500 मन अमूल्य हीरे-जवाहरात थे।

अलाउद्दीन के दक्खन एवं दक्षिण सैनिक अभियानों के दो मुख्य उद्देश्य थे (1) इन क्षेत्रों में दिल्ली के सुल्तान के प्रभुत्व को औपचारिक मान्यता प्रदान करना, और (2) कम से कम जीवन के नुक्सान पर अधिक से अधिक धन-सम्पदा एकत्रित करना। विजित किये गये क्षेत्रों का अधिग्रहण करने की बजाय विजित राज्यों द्वारा उसके सामन्तीय प्रभुत्व को स्वीकार करने की नीति अलाउद्दीन खलजी की राजनीतिक सर्वोच्चता को परिलक्षित करती है।

मलिक काफूर के माबार से लौटने के एक वर्ष के अन्दर ही दक्खन में होने वाली घटनाओं को लेकर अधिग्रहण न करने की नीति का पुर्नावलोकन करने की आवश्यकता महसूस हुई। 1312 ई० के उत्तरार्द्ध में देवगिरि के शासक राम देव की मृत्यु के बाद उसका पुत्र भील्लमा उत्तराधिकारी बना। भील्लमा ने दिल्ली के सुल्तान के प्रभुत्व को मानने से इंकार कर दिया और उसने स्वयं को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया। अलाउद्दीन ने मलिक काफूर को इस विद्रोह को कुचलने के लिये भेजा और प्रांत पर अस्थायी नियंत्रण करने का भी आदेश दिया। लेकिन मलिक काफूर को शीघ्र ही वापस बुला लिया गया और उसे आइन उल मुल्क को इस प्रांत का नियंत्रण सौंप देने का आदेश मिला। अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद जनवरी 1316 ई० में आइन उल मुल्क को भी देवगिरी की समस्या को हल किये वगैर दिल्ली वापस बुला लिया गया। इस तरह से अलाउद्दीन का उत्तराधिकारी मुबारक खलजी सत्तासीन होने के तुरन्त बाद ही देवगिरी की ओर प्रस्थान करना चाहता था, लेकिन उसके कुलीन सलाहकारों ने उसको सलाह दी कि वह देवगिरी के अभियान पर न जाये और पहले दिल्ली में अपनी स्थिति को सुदृढ़ करे। मुबारक ने अपने शासन के दूसरे वर्ष में अप्रैल 1317 ई० में इस अभियान के लिये प्रस्थान किया। देवगिरी की ओर से कोई विरोध नहीं किया गया और मराठा सरदारों ने सुल्तानों के सम्मुख समर्पण कर दिया। इस प्रांत को सल्तनत के अधीन कर लिया गया।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित दिये गये स्थानों में से उस स्थान की पहचान कीजिये जिसको अलाउद्दीन खलजी ने दिल्ली का सुल्तान बनने पर प्रथम बार विजित किया।

   अ) देवगिरी

   ब) मालवा

   स) गुजरात

   द) माबर

2) निम्नलिखित स्थानों में से किन-किन प्रदेशों को अलाउद्दीन खलजी द्वारा सल्तनत में मिला लिया गया था।

   अ) वारंगल

   ब) सिवाना

   स) देवगिरी

   द) जालौर

3) दक्खन एवं सुदूर दक्षिण के प्रति अलाउद्दीन की नीति की व्याख्या कीजिये।

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

4) नीचे उल्लेखित नामों की सूची में से देवगिरी का सल्तनत के साथ अधिग्रहण करने के बाद किसको प्रथम गवर्नर बनाया गया था।

   अ) राय रामचन्द्र देव

   ब) मलिक काफूर

   स) मुबारक खलजी

   द) खुसरो खान

15.3 तुगलक शासन का प्रसार

तुगलक वंश दिल्ली में जिस समय सत्ता में आया (गियासुद्दीन तुगलक ने 1320 ई० में दिल्ली के सिंहासन को प्राप्त किया) उस समय सल्तनत राजनीतिक अस्थिरता से त्रस्त थी। नये शासक द्वारा तुरन्त ध्यान दिये जाने की आवश्यकता थी। दूर-दराज के प्रांतों ने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी थी। सल्तनत का प्रभावशाली नियन्त्रण केवल केन्द्रीय भू-भाग तक ही सिमट कर रह गया था। प्रशासनिक तन्त्र पूर्णतः पंगु हो चुका था। यह स्वाभाविक ही था कि गियासुद्दीन ने अपना ध्यान आर्थिक एवं प्रशासनिक स्थिति को सुधारने की ओर केन्द्रित किया। लेकिन शीघ्र ही साम्राज्य के बाहय प्रांतों में प्रतिष्ठा एवं प्रभुत्व को पुनर्स्थापित करने का प्रश्न पैदा हो गया।

15.3.1 दक्षिण भारत

दक्षिण में राजनीतिक स्थिति किसी भी तरह से संतोषजनक न थी। अलाउद्दीन के प्रभुत्व को स्वीकार करने और दक्षिण के शासकों द्वारा वफादारी का वचन नाममात्र के लिए ही था। देवगिरी और तेलंगाना के प्रांतों में शाही प्रभुत्व को पुनर्स्थापित करने के लिए नये सैनिक अभियानों की निश्चय ही आवश्यकता थी। जैसा कि आपने ऊपर पढ़ा कि देवगिरी को मुबारक खलजी द्वारा पहले ही सल्तनत के अधीन कर लिया गया था। लेकिन देवगिरी के पार के दक्षिणी राज्यों ने सल्तनत सत्ता के बचे अवशेषों को भी उखाड़ फेंका था। इसलिए तेलंगाना क्षेत्र पर सुल्तान गियासुद्दीन ने तत्काल अपना ध्यान केन्द्रित किया।

सन् 1321 ई० में उलुग खाँ (बाद में मौहम्मद तुगलक के नाम से जाना गया) ने एक विशाल सेना के साथ दक्षिण के लिये प्रस्थान किया। मार्ग में बिना किसी बड़ी बाधा के ही वह वारंगल पहुंच गया। दो सैनिक घिरावों के बाद—जो प्रत्येक चार या पाँच माह चले—वहाँ का शासक राय रुद्र अन्ततः समर्पण करने के लिये तैयार हो गया। लेकिन इस बार विद्रोही को क्षमा करने का कोई अवसर नहीं दिया गया। किले पर अधिकार कर लिया गया, लूटा गया और कुछ तोड़-फोड़ के कार्यों को किया गया। राय को गिरफ्तार कर सुरक्षित रूप से दिल्ली लाया गया। वारंगल का अधिग्रहण कर उसको सल्तनत के प्रत्यक्ष प्रशासन के अधीन कर लिया गया।

इसी नीति का अनुसरण करते हुए उलुग खाँ ने माबार को भी समर्पण करने के लिये बाध्य किया और यहाँ पर भी प्रत्यक्ष शाही प्रशासन स्थापित किया। इस तरह से तेलंगाना के क्षेत्र को दिल्ली सल्तनत का एक भाग बना दिया गया और उसको कई प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित कर दिया। स्थानीय योग्य लोगों को प्रशासन में पर्याप्त स्थान दिया गया और पराजित लोगों के विरुद्ध दमन की नीति को समाप्त कर उनको क्षमा कर दिया गया।

15.3.2 पूर्वी भारत

पूर्वी भारत में किये गये सैनिक अभियान दक्षिण में होने वाले युद्धों का परिणाम थे। शाही सेना के वारंगल पर आक्रमण के समय उड़ीसा में स्थिति जाजनगर के शासक भानुदेव द्वितीय ने वारंगल नरेश रुद्र देव की सहायता की थी अतः सन् 1324 ई० के मध्य उलुग खाँ ने वारंगल से प्रस्थान करते हुए जाजनगर पर भी आक्रमण किया। दोनों के मध्य घमासान युद्ध हुआ और अन्ततः विजय उलुग खाँ की हुई। उसने शत्रु के पड़ाव को खूब लूटा और बहुत अधिक धन एकत्रित किया। जाजनगर को जीतकर उसको सल्तनत का एक अंग बना दिया गया।

पूर्वी भारत में बंगाल प्रांत सदैव से ही विद्रोहों का गढ़ रहा था। इस प्रांत के गवर्नर स्वयं को स्वतन्त्र करने का कोई भी अवसर नहीं जाने देते थे। लखनौती राज्य के स्वतन्त्र शासक फिरोज़ शाह की मृत्यु के बाद 1323-24 ई० में सिंहासन के लिये भाइयों के बीच युद्ध प्रारम्भ हो गया। लखनौती के कुछ कुलीन सहायता के लिये गियासुद्दीन के पास आये। गियासुद्दीन ने सहायता करने का वचन दिया और स्वयं बंगाल की ओर प्रस्थान किया। तिरहुत पहुंचने पर सुल्तान वहाँ पर ठहर गया और उसने बहराम खाँ को अन्य अधिकारियों के साथ लखनौती भेजा। विरोधी सेनाओं में परस्पर संघर्ष लखनौती के समीप हुआ। सुल्तान की सेनाओं ने सरलता से बंगाल की सेनाओं को पराजित कर दिया और कुछ दूरी तक उनका पीछा किया। नसीरुद्दीन के नेतृत्व में युद्धरत एक समूह को लखनौती में एक अधीनस्थ शासक के तौर पर नियुक्त कर दिया गया।

15.3.3 उत्तर-पश्चिम तथा उत्तर

अलाउद्दीन के मुल्तान अभियान से ही सुल्तान की पश्चिमी सीमाएँ स्थिर बनी रही थीं। सुल्तान दक्षिण एवं गुजरात के मामलों में ज्यादातर व्यस्त रहे। अतः मौहम्मद तुगलक के सत्ता में आ

दिल्ली सल्तनत
c.1335
सीमाएँ
कश्मीर
झेलम न.
चेनाब न.
रावी न.
ब्यास न.
लाहौर
कलानौर
मुल्तान
सिंधु न.
उच्छ
हिमालय पर्वत
दिल्ली
बदायूँ
कोल
अवध
कन्नौज
कनौज
सिविस्तान
ग्वालियर
कड़ा
लखनौती
ब्रह्मपुत्र न.
कामरूप
बिहार
मालवा
उज्जैन
नर्मदा न.
गुजरात
चटगाँव
महानदी न.
जाजनगर
दौलताबाद
गोदावरी न.
वारंगल
गुलबर्गा
सुल्तानपुर
तेलंगाना
कृष्णा न.
सिन्दबुर
गोवा
तुंगभद्रा न.
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
द्वार समुद्र
माबार
कावेरी न.
कालीकट
मदुरा
श्रीलंका
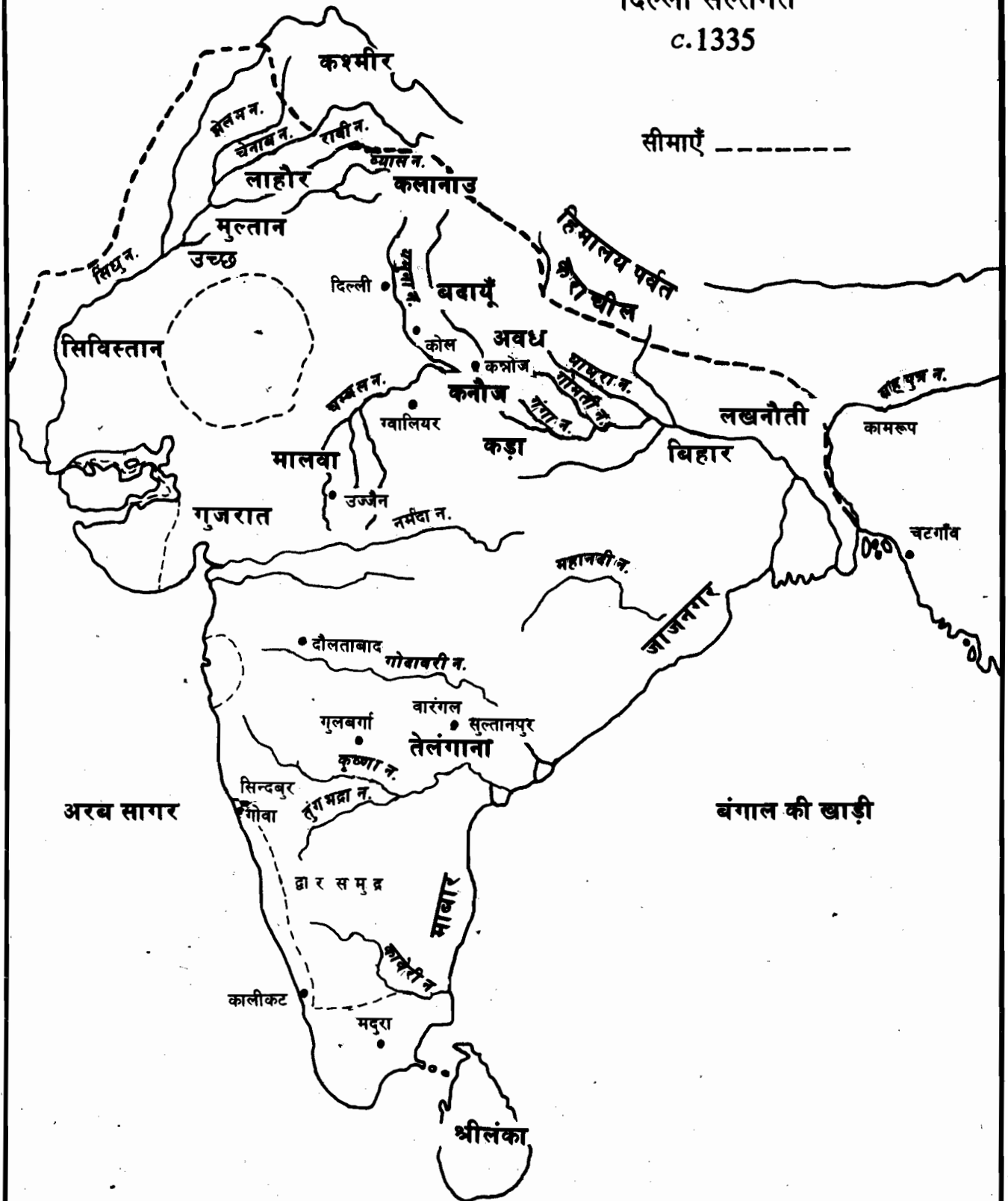
जाने के बाद ही उत्तर-पश्चिम सीमा की ओर ध्यान केन्द्रित किया जा सका। सिंहासनारूढ़ होने के तुरन्त बाद मौहम्मद तुगलक ने कलानौर एवं पेशावर में सैनिक अभियान भेजे। संभवतः यह 1326-27 ई० में तरमाशिरीन खाँ के नेतृत्व में हुए मंगोल आक्रमणों का परिणाम था। इसलिये मौहम्मद तुगलक अपने इन अभियानों द्वारा भविष्य में मंगोलों के होने वाले आक्रमणों से उत्तर-पश्चिम सीमा को सुरक्षित करना चाहता था। सुल्तान कलानौर जाते समय स्वयं लाहौर में ठहरा लेकिन उसने अपनी सेना को कलानौर तथा पेशावर पर आक्रमण करने का आदेश दिया। इस कार्य को बिना किसी विशेष कठिनाई के पूरा कर लिया गया। सुल्तान ने इन नये विजित किये गये क्षेत्रों की प्रशासनिक व्यवस्था को दुरुस्त किया तत्पश्चात् वापस दिल्ली लौट आया।

लगभग 1332 ई० में सुल्तान मौहम्मद तुगलक ने कराचील क्षेत्र को विजित करने की योजना बनायी। इस क्षेत्र की पहचान हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित आधुनिक कुल्लू से की जाती है। यह उत्तर तथा उत्तर-पश्चिम सीमा की किलेबन्दी करने की योजना का ही एक भाग था। इस उद्देश्य के लिये उसने खुसरो मलिक के नेतृत्व में एक विशाल सेना भेजी। सेना ने कराचील क्षेत्र के महत्वपूर्ण स्थान जिद्या पर अधिकार करने में सफलता प्राप्त की। सुल्तान का आदेश इस स्थान को विजित करने के पश्चात् वापस लौटने का था। लेकिन खुसरो मलिक ने अपने उत्साह में सुल्तान के आदेश को नहीं माना और वह तिब्बत की ओर आगे बढ़ गया। परन्तु शीघ्र ही वर्षा प्रारम्भ हो गई और सेना बीमारी और प्रकोपों का शिकार हो गई। यह विपत्ति इतनी भयंकर थी कि मात्र तीन जवान इस विपत्ति पूर्ण कहानी का विवरण देने के लिए जीवित वापिस आ सके। कराचील अभियान में संसाधनों का काफी नुकसान हुआ और इससे सुल्तान मौहम्मद तुगलक की प्रभुसत्ता को भी काफी ठेस पहुंची।

कराचील अभियान से कुछ समय पूर्व सुल्तान मौहम्मद तुगलक ने मध्य एशिया में स्थित खुरासान को अपने अधीन करने के लिए एक अति महत्वाकांक्षी योजना को प्रारम्भ किया। इस उद्देश्य के लिये 370,00 की एक विशाल सेना को भर्ती किया गया और सिपाहियों को एक वर्ष के वेतन का भुगतान पहले ही कर दिया गया। सेना के लिये मूल्यवान हथियारों को खरीदने के लिये काफी बड़ी मात्रा में धन खर्च किया गया। परन्तु अन्ततः इस योजना को यह कह कह छोड़ दिया गया कि यह अव्यावहारिक है। सेना को भी बर्खास्त कर दिया गया। इसके कारण न केवल गम्भीर वित्तीय हानि हुई बल्कि सुल्तान की प्रभुसत्ता को भी काफी गहरा धक्का लगा और इसके फलस्वरूप कई विद्रोह भी हुए जो दिल्ली सल्तनत के लिये अत्यधिक हानिकारक साबित हुए।

बोध प्रश्न 2

1) दक्षिणी राज्यों का दिल्ली सल्तनत में कब अधिग्रहण किया गया?

   अ) अलाउद्दीन खलजी के शासन काल में

   ब) गियासुद्दीन तुगलक के शासन काल में

   स) मौहम्मद तुगलक के शासन काल में

2) मौहम्मद तुगलक ने निम्नलिखित में से कौन से सैनिक अभियान का परित्याग कर दिया था?

   अ) वारंगल

   ब) कराचील

   स) जाजनगर

   द) खुरासान

3) कराचील अभियान एक त्रासदी साबित क्यों हुआ?

   ....

   ....

   ....

4) निम्नलिखित में से कौन सा प्रदेश 1335 ई० में सल्तनत की पूर्वी सीमा को निर्धारित करता था

   अ) जाजनगर

   ब) पेशावर

   स) कलानौर

   द) मालवा।

15.4 सारांश

आप इकाई 14 में पढ़ चुके हैं कि इल्तुतमिश की सन् 1236 ई० में मृत्यु के बाद किस तरह से दिल्ली सल्तनत की सीमाओं का प्रसार रुक गया था। इसके बाद आधी शताब्दी तक दिल्ली के सुल्तानों के सभी प्रयास वित्तीय एवं प्रशासनिक सुधारों को मजबूती प्रदान कर प्रारंभिक क्षेत्रीय उपलब्धियों को सुदृढ़ करने की ओर थे। क्षेत्रीय प्रसार के दूसरे चरण का प्रारम्भ 14वीं सदी ई० के प्रारम्भ में खलजियों के अधीन ही हुआ। अलाउद्दीन के प्रशासनिक एवं वित्तीय उपायों ने जहाँ सल्तनत के सुदृढ़ीकरण में मदद की वहीं दूसरी ओर सल्तनत के आधार को भी विस्तृत किया। नये क्षेत्रों का अधिग्रहण एक वास्तविक स्वरूप को प्राप्त कर सका। तब भी हम यह देखते हैं कि अलाउद्दीन सल्तनत के केन्द्रीय स्थल से एक उचित दूरी तक ही बढ़ा और उसने सीधे अधिग्रहण किये गये क्षेत्रों पर सुल्तान के प्रभावशाली नियन्त्रण को स्थापित किया और इन क्षेत्रों को सल्तनत के प्रांत बना दिया गया। लेकिन दूर के प्रांतों पर दो कारणों से विजय प्राप्त की गई प्रथम उद्देश्य धन प्राप्त करना था और दूसरे उन राज्यों को प्रत्यक्ष तौर पर सल्तनत के अधीन न करके उनको संरक्षित राज्य का दर्जा प्रदान करना था। यह उन राज्यों के लिये विशेष रूप से सत्य था जिनको दक्खन एवं सुदूर दक्षिण में विजित किया गया था।

लेकिन मुबारक खलजी द्वारा देवगिरी के मामले में इस नीति में परिवर्तन किया गया। इसी नीति का अनुसरण गियासुद्दीन तुगलक ने वारंगल एवं माबार जैसे सुदूर दक्षिण में स्थित राज्यों के विषय में भी किया। इन राज्यों पर प्रभावकारी प्रशासन कायम करने के उद्देश्य से मौहम्मद तुगलक ने देवगिरी को सल्तनत की दूसरी प्रशासनिक राजधानी बनाया। लेकिन यह प्रयोग अल्पकालिक सिद्ध हुआ और इसकी असफलता का कारण सल्तनत के शासक एवं अन्य वर्गों की अनिच्छा का होना था। इन सबके बावजूद भी मौहम्मद तुगलक के शासन काल में सल्तनत की सीमाएँ अपने चर्मोत्कर्ष पर थीं, उत्तर-पश्चिम में पेशावर, दक्षिण में माबार, पश्चिम में गुजरात तथा पूर्व में उड़ीसा में जाजनगर तक फैली हुई थीं। यह भाग्य की विडम्बना ही है कि मौहम्मद तुगलक के शासन के अन्तिम वर्षों में ही सल्तनत की सीमाएँ लगभग 1296 ई० की सीमाओं तक सिकुड़ने लग गई थीं। इस पतन के कारणों पर खंड 5 की इकाई 18 में प्रकाश डाला जायेगा।

15.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) (अ) × (ब) × (स) √
2) (अ) × (ब) √ (स) × (द) √
3) देखें उपभाग 15.2.3
4) (अ) × (ब) √ (स) × (द) ×

बोध प्रश्न 2

1) (अ) × (ब) √ (स) ×
2) (अ) × (ब) × (स) × (द) √
3) देखें उपभाग 15.3.3
4) (अ) √ (ब) × (स) × (द) ×

परिशिष्ट

दिल्ली सुल्तानों का तिथिक्रम (सन् 1206 ई०-सन् 1526 ई०)

इलबरी

1)	कुतुबुद्दीन ऐबक	1206-1210
2)	आरामशाह (केवल कुछ महीने)	1210
3)	इल्तुतमिश	1210-1236
4)	रज़िया	1236-1240
5)	बहराम शाह	1240-1242
6)	मसूद शाह	1242-1246
7)	नसीरुद्दीन	1246-1266
8)	गियासुद्दीन बल्बन	1266-1287
9)	कैकूबाद	1287-1290

खलजी

1)	जलालुद्दीन खलजी	1290-1296
2)	अलाउद्दीन खलजी	1296-1316
3)	कुतुबुद्दीन मुबारक	1316-1320

तुगलक

1)	गियासुद्दीन तुगलक	1320-1325
2)	मौहम्मद तुगलक	1325-1351
3)	फिरोज़ तुगलक	1351-1388
4)	तुगलक शाह II	1388-1390
5)	नसीरुद्दीन मौहम्मद शाह	1390-1394
6)	मौहम्मद शाह तुगलक	1394-1412

सैय्यद

1)	खिज्र खां	1414*-1421
2)	मुबारक शाह	1421-1434
3)	मौहम्मद शाह	1434-1443
4)	अलाउद्दीन आलमशाह	1443-1451

लोदी

1)	बहलोल लोदी	1451-1489
2)	सिकन्दर लोदी	1489-1517
3)	इब्राहिम लोदी	1517-1526

* 1412 से 1414 तक का काल आंतरिक संघर्षों का काल था।

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

ऐ. बी. एम. हबीबुल्लाह : **दि फाउन्डेशन ऑफ मुस्लिम रूल इन इंडिया** (अंग्रेजी)

के. एस. लाल, **खलजी वंश का इतिहास 1290-1320 ई० तक** (हिन्दी संस्करण)

आगा मेहंदी हुसैन : **तुगलक डायनेस्टी** (अंग्रेजी)

अवध बिहारी पाण्डे, **पूर्व मध्यकालीन भारत** (हिन्दी संस्करण)

मौहम्मद हबीब एवं के.ए. निजामी : **दिल्ली सल्तनत** भाग I, II